29-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अपने को आत्मा समझ आत्मा से बात करो तो फूल में खुशबू आती जायेगी, देह-अभिमान की बदबू निकल जायेगी"

प्रश्नः- अपनी खुशबू चारों ओर फैलाने वाले सच्चे फूल वा परवाने कौन हैं?

उत्तरः- सच्चे फूल वह जो अनेकों को आप समान खुशबूदार फूल बनायें। श्रीमत पर चल शमा पर जल मरने वाले अर्थात् पूरा-पूरा बलिहार जाने वाले, जीते जी मरने वाले सच्चे परवानों की वा ऐसे फूलों की खुशबू स्वत: ही चारों ओर फैलती है।

गीत:-महफिल में जल उठी शमा... Click

(महफ़िल में जल उठी शमा, परवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये) -२

चारों तरफ़ लगाए फेरे, फिर भी हरदम दूर रहे
उल्फ़त देखो आग बनी है, मिलने से मजबूर रहे
यही सज़ा हैं दुनिया में
यही सज़ा हैं दुनिया में, दीवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

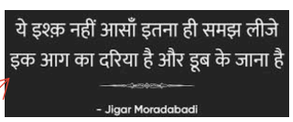

मरने का है नाम मुहब्बत, जलने का है नाम जवानी
पत्थर दिल हैं सुनने वाले, कहने वाला आँख का पानी
आँसू आये आँखों में
आँसू आये आँखों में, गिर जाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

महफ़िल में जल उठी शमा, परवाने के लिये
प्रीत बनी हैं दुनिया में, मर जाने के लिये

Points: ज्ञान योग

ओम् शान्ति। जैसे परवानों ने गीत सुना। परवाने कहो वा फूल कहो बात एक ही है। बच्चे समझते हैं हम सचमुच परवाने बने हैं या सिर्फ फेरी पहन कर चले जाते हैं? शमा को भूल जाते हैं। हर एक को अपनी दिल से पूछना है कि हम कहाँ तक फूल बने हैं और ज्ञान की खुशबू फैलाते हैं? अपने जैसा फूल किसको बनाया है? यह तो बच्चे जानते हैं - ज्ञान का सागर बाप है, उनकी कितनी खुशबू है? जो अच्छे फूल वा परवाने हैं उनकी जरूर अच्छी खुशबू आयेगी। वह सदैव खुश रहेंगे औरों को भी आप समान फूल वा परवाने बनायेंगे। फूल नहीं तो कली बनायेंगे। Definition of पूरे परवाने वह हैं जो जीते जी मरते हैं। बलि चढ़ते हैं अथवा ईश्वरीय औलाद बनते हैं। कोई साहूकार, किसी गरीब के बच्चे को गोद में लेते हैं तो बच्चों को उस साहूकार की गोद में आने से फिर वही माँ-बाप याद आते रहते हैं और गरीब की याद भूल जायेगी। जानते हैं कि हमारे माँ-बाप गरीब हैं परन्तु याद साहूकार माँ-बाप को करेंगे, जिससे धन मिलता है। साधू-संन्यासी आदि हैं वह साधना करते हैं मुक्तिधाम में जायें। सब मुक्ति के

पुछो अपने आप से...

लिए ही पुरुषार्थ करते हैं परन्तु मुक्ति का अर्थ नहीं समझते। कोई कहते हैं ज्योति ज्योत समायेंगे। कोई समझते हैं पार निर्वाणधाम जाते हैं। निर्वाणधाम में जाने को ज्योति में समाना या मिल जाना नहीं कहा जाता। तुम समझते हो - हम दूर देश के रहने वाले हैं। इस गन्दी दुनिया में रहकर क्या करेंगे। बच्चों को समझाया है जब कोई से मिलो तो यह समझाना पड़े कि यह बना बनाया (Ready made) ड्रामा है। सतयुग त्रेता... फिर संगमयुग। यह भी समझाया है सतयुग के बाद त्रेता का संगम होता है। वह युग फिरता है और यह कल्प फिरता है। बाप युगे-युगे नहीं आते हैं। जैसे मनुष्य समझते हैं। बाप कहते हैं - जब, सब तमोप्रधान बन जाते हैं, कलियुग का अन्त होता है, उस कल्प के संगम पर आता हूँ। युग पूरा होता है तो कलायें कम होती हैं। यह तो जब पूरा ग्रहण लग जाता है तब मैं आता हूँ। मैं युगे-युगे नहीं आता हूँ। यह बाप बैठ परवानों को समझाते हैं। परवानों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो जल मरते हैं, कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं। श्रीमत पर तुम ही चल सकते हो। अगर कहाँ भी

Mind very well...

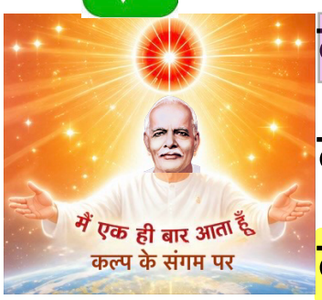

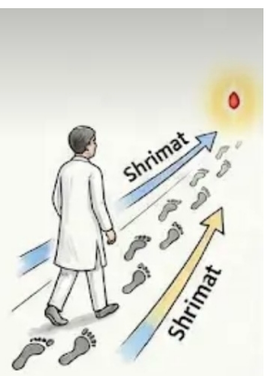

चढ़ाओ नशा...

वाह रे मैं...

Example

M.imp.

श्रीमत पर न चले तो माया पिछाड़ती रहेगी। श्रीमत का बहुत गायन है। श्रीमत भगवत गीता कहा जाता है। शास्त्र तो बाद में बैठ जिन्होंने बनाये तो उस समय बुद्धि रजो होने कारण समझा कि श्रीकृष्ण द्वापर में आया। मैं आता ही तब हूँ जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है। बाकी सब धर्म रहते हैं। ऐसे नहीं कि वह देवता धर्म वाले मनुष्य गुम हो जाते हैं परन्तु यह भूल जाते हैं कि हम देवी-देवता धर्म के थे। अपना हिन्दू धर्म कह देते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। जब भूलें तब तो फिर मैं आकर देवी-देवता धर्म की स्थापना करूँ। यह एक ही बाप है जो आकर दु:खधाम से सुखधाम का मालिक बनाते हैं। तुम कहेंगे अभी हम नर्क के मालिक हैं। दुनिया को तमोप्रधान तो बनना ही है। सब पतित हैं तब तो पावन के आगे जाकर नमस्ते करते हैं। अब बाप कहते हैं, श्रीमत पर चलो। जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर बहुत है। नहीं तो त्राहि-त्राहि करना पड़ेगा। वह तो समझते हैं, आत्मा निर्लेप है परन्तु नहीं, आत्मा ही सुख-दु:ख देखती है। यह कोई

Most imp Point to be Noted

महाकाल उवाच:

=

समझा?

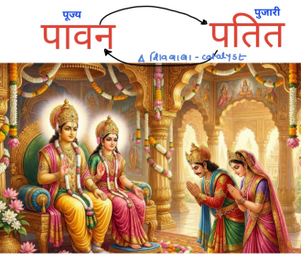

समझते नहीं। बाबा बार-बार समझाते हैं - मंजिल बहुत भारी है। इस समय तुम पुरुषार्थ करते हो जबकि दु:खी हो। जानते हो, सतयुग में हम बहुत सुखी रहेंगे। वहाँ यह पता नहीं रहेगा कि हमको फिर दु:खधाम में जाना है। हम सुख में कैसे आये हैं, कितने जन्म लेंगे, कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम जानते हो तो ऊंच कौन ठहरे? तुम ईश्वर की औलाद होने के कारण जैसे ईश्वर नॉलेजफुल है, ऐसे तुम भी नॉलेजफुल ठहरे। अभी तुम ईश्वरीय औलाद हो परन्तु नम्बरवार। कोई तो बड़े मस्त हैं, समझते हैं हम बाबा की मत पर चलते रहते हैं।

चढ़ाओ नशा...

Simple Math..

जितना मत पर चलेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे। बाप सम्मुख बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे देह-अभिमान छोड़ दो, देही-अभिमानी बनो, निरन्तर याद करो। बाप तो सदैव है ही सुखदाता। ऐसे नहीं कि दु:ख भी बाप ही देते हैं। बाप कभी बच्चों को दु:ख नहीं देंगे। बच्चे अपनी उल्टी चलन से दु:ख पाते हैं। बाप दु:ख नहीं दे सकते। कहते हैं हे भगवान बच्चा दो तो कुल वृद्धि को पायेगा। बच्चे को बहुत प्यार करते हैं। बाकी दु:ख अपने कर्मो

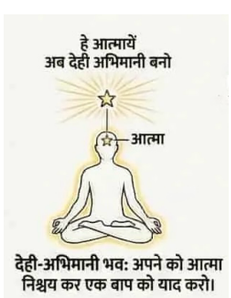

ये पक्का समझ लो..

ये पक्का समझ लो..

का ही पाते हैं। अब बाप तुम बच्चों को बहुत सुखी बनाते हैं। कहते हैं श्रीमत पर चलो। आसुरी मत पर चलने से तुम दु:ख पाते हो। बच्चे, बाप अथवा टीचर अथवा बड़ों की आज्ञा न मानने से दु:खी होते हैं। दु:खदाई खुद बनते हैं, माया के बन पड़ते हैं। ईश्वर की मत अब ही तुमको मिलती है। ईश्वरीय मत की रिजल्ट 21 जन्म चलती है फिर आधाकल्प माया की मत पर चलते हैं। ईश्वर एक ही बार आकर मत देते हैं। माया तो आधाकल्प से मत देती ही रहती है। बाप, एक ही बार मत देते हैं। माया की मत पर चलते 100 परसेन्ट दुर्भाग्य-शाली बन पड़ते हैं।

अभी नहीं तो कभी नहीं

जो अच्छे-अच्छे फूल हैं वह उसी खुशी में सदैव मस्त रहेंगे। नम्बरवार हैं ना। परवाने कोई तो बाप के बन श्रीमत पर चल पड़ते हैं। गरीब ही अपना पोतामेल लिखते हैं। साहूकारों को डर लगता है कि यहाँ हमारे पैसे ले न लेवें। साहूकारों के लिए बड़ा

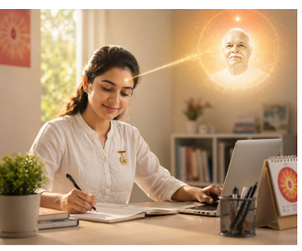

गरीब नवाज़

29-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मुश्किल है। बाप कहते हैं - मैं गरीब निवाज हूँ। दान भी हमेशा गरीबों को ही दिया जाता है। सुदामा की बात है ना - चावल चपटी ले उनको महल दे दिये। तुम हो गरीब। समझो कोई के पास 25-50 रूपये हैं, उनमें से 20-25 पैसे देता है। साहूकार 50 हजार दे तो भी इक्वल हो जाता है इसलिए गरीब निवाज़ नाम गाया हुआ है। साहूकार लोग भी कहते हैं, हमको फुर्सत नहीं मिलती क्योंकि पूरा निश्चय नहीं हैं। तुम हो गरीब। गरीबों को धन मिलने से खुशी होती है। बाबा ने समझाया है यहाँ के गरीब वहाँ साहूकार बन जाते हैं और यहाँ के साहूकार वहाँ गरीब बन जाते हैं।

Example

How Wonderful Math of Almighty.

कई कहते हैं, हम यज्ञ का ख्याल रखें वा कुटुम्ब का ख्याल रखें? बाबा कहते हैं तुम अपने कुटुम्ब की बहुत अच्छी सम्भाल करो। अच्छा है जो तुम इस समय गरीब हो। साहूकार होते तो बाप से पूरा वर्सा ले नहीं सकते। संन्यासी ऐसे नहीं कहेंगे। वह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

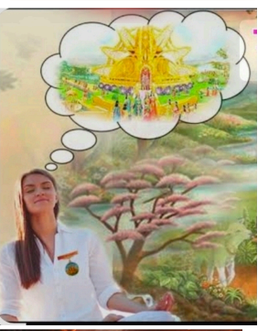

29-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तो पैसे लेकर अपनी जागीर बनाते हैं। शिवबाबा थोड़ेही बनायेंगे। यह मकान आदि सब तुम बच्चों ने अपने लिए बनाये हैं। यह किसकी जागीर नहीं, यह तो टैप्रेरी है क्योंकि Coming soon... अन्त समय बच्चों को यहाँ आकर रहना है। हमारा यादगार भी यहाँ है। तो पिछाड़ी में यहाँ आकर विश्राम लेंगे। बाप के पास भागेंगे वह Mind well जो योगयुक्त होंगे। उन्हों को मदद भी मिलेगी। बाप की बहुत मदद मिलती है। तुमको यहाँ बैठ विनाश देखना है। जैसे शुरू में बाबा ने तुम बच्चों को बहलाया है फिर पिछाड़ी में बहलाने शुरू करेंगे। बहुत प्यार करेंगे। जैसे वैकुण्ठ में बैठे हैं, बहुत नजदीक होते जायेंगे। यह तो समझते हैं कि हम यात्रा पर हैं। थोड़े समय के बाद विनाश होगा। तुम बहुत खुश हो जायेंगे। बस हम जाकर प्रिन्स बनेंगे। किसम-किसम के फूल हैं। हर एक बच्चे को समझना चाहिए - मैं कितनी ज्ञान की खुशबू दे रहा हूँ! किसको ज्ञान और योग की शिक्षा देता हूँ! जो करते हैं वह अन्दर प्रफुल्लित रहते हैं। बाबा जान जाते हैं कि यह किस अवस्था में रहते हैं। इनकी अवस्था कहाँ तक गैलप करेगी! गैलप

Gallop

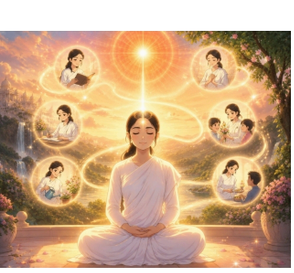

उनकी करेगी जो परवाना बन चुका होगा। बाप समझाते हैं - माया के तूफान तो बहुत आयेंगे, उनसे अपने को बचाना है। अभी यह राजयोग परमपिता परमात्मा आकर सिखलाते हैं। परमात्मा आकर आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा को ज्ञान है - मैं आत्मा अपने इस ब्रदर आत्मा को समझाती हूँ। जैसे परमात्मा बाप हम आत्मा बच्चों को समझाते हैं। हम भी आत्मा हैं। बाबा हमको सिखलाते हैं, हम फिर इन आत्माओं को समझाता हूँ परन्तु यह आत्मा-पन का निश्चय न होने से अपने को मनुष्य समझ, मनुष्य को ही समझाते हैं। मैं परम आत्मा तुम आत्माओं से बात करता हूँ। तुम आत्मा को सुनाते हो। ऐसे तुम देही-अभिमानी होकर किसको सुनायेंगे तो वह तीर झट लगेगा। अगर खुद ही देही-अभिमानी नहीं रह सकते तो धारणा करा नहीं सकते। यह बड़ी ऊंची मंजिल है। बुद्धि में यह रहना चाहिए कि हम इन आरगन्स से सुनते हैं। बाप कहते हैं - हम आत्माओं (बच्चों) से बात करते हैं। बाबा का फरमान है अशरीरी (नंगे) बनो। देह-अभिमान छोड़ो, मेरे को याद करो - यह

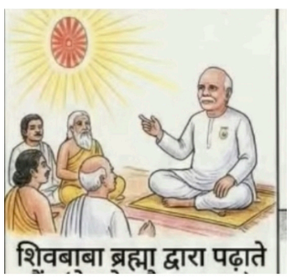

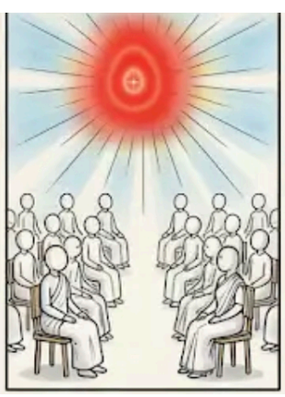

चढ़ाओ नशा...

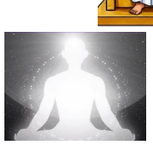

बुद्धि में आना चाहिए। हम आत्मा से बात करता हूँ, शरीर से नहीं। भल फीमेल है, उनकी भी आत्मा से बात करते हैं।

Mind It...

तुम बच्चे समझते हो - हम बाबा के तो बन गये परन्तु नहीं, इसमें बड़ी सूक्ष्म बुद्धि चलती है। मैं आत्मा हूँ, मैं इनकी आत्मा को समझाता हूँ। यह हमारा भाई है, इनको रास्ता बताना है। आत्मा समझ रही है। ऐसे समझो तब आत्मा को तीर लगे। देह को देखकर सुनाते हो तो आत्मा सुनती नहीं है। पहले यह वारनिंग दो कि मैं आत्मा से बात करता हूँ। आत्मा को न तो मेल, न फीमेल कहेंगे। आत्मा तो न्यारी है। मेल-फीमेल शरीर से नाम पड़ता है। जैसे ब्रह्मा-सरस्वती को मेल-फीमेल कहेंगे। शिव-बाबा को न मेल, न फीमेल कहेंगे। तो बाप आत्माओं को समझाते हैं। बड़ी मंजिल है। प्वाइंट बड़ी कड़ी है। आत्मा को इन्जेक्शन लगाना है, तब देह-अभिमान टूटता है। नहीं तो खुशबू नहीं

Point to be Noted

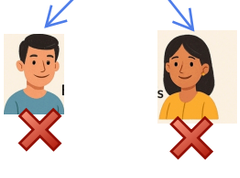

आयेगी, ताकत नहीं रहेगी। बात बहुत छोटी है। हम आत्मा से बात कर रहे हैं। बाप कहते हैं - तुमको वापिस जाना है इसलिए देही-अभिमानी बनो। मनमनाभव। फिर आटोमेटिकली मध्याजी भव आ जाता है। अभी बड़ी सूक्ष्म बुद्धि मिलती है। सवेरे में बैठ विचार सागर मंथन करना है। दिन में तो सर्विस करनी है क्योंकि कर्मयोगी हैं। लिखा भी हुआ है नींद को जीतने वाले बनो। रात को जागकर कमाई करो। दिन में तो माया का बड़ा बखेरा है। अमृतवेले वायुमण्डल अच्छा है। बाबा को यह तो लिखते नहीं कि फलाने टाइम पर उठकर विचार सागर मंथन करते हैं। बड़ी मेहनत है। विश्व के तुम मालिक बनते हो। यहाँ तो हद के मालिक हो। पानी की हद पर भी कितना झगड़ा चलता रहता है। दुश्मनी लगी पड़ी है। आपस में एक दो को ब्रदर्स समझते नहीं। सिर्फ ऐसे ही कह देते हैं कि हम सब एक हैं। एक तो हो न सकें। अनेक आत्मायें हैं, सबका अपना-अपना पार्ट है। तुम यहाँ बैठे हो। कल्प पहले भी बैठे होंगे। पत्ता हिला ड्रामा अनुसार। ऐसे नहीं पत्ते-पत्ते को

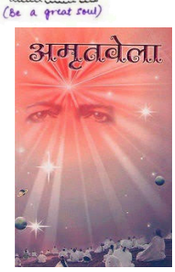

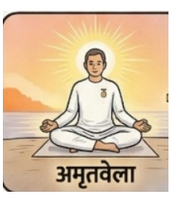

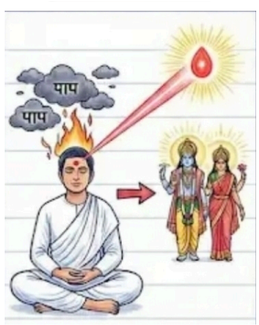

परमात्मा हिलाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें समझकर फिर समझाओ। हर एक समझ सकते हैं कि हम परवाना बने हैं! हम बाबा की मत पर चलते रहते हैं! फालतू बातें तो नहीं करते हैं! कहाँ अपना पैसा पाप की तरफ तो नहीं लगा रहे हैं? अच्छा -

Self Checking

1 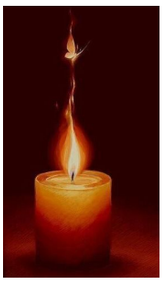

2

3

4

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं को आत्मा समझ आत्मा से बात करनी है। देही-अभिमानी बनकर सुनने-सुनाने से धारणा अच्छी होगी।

2) नींद को जीतने वाला बनना है, रात को जागकर कमाई करनी है। विचार सागर मंथन करना है। किसी भी फालतू बातों में अपना समय नहीं गँवाना है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये जो रात्रिके समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्दकी प्राप्तिमें स्थितप्रज्ञ योगी जागता है और जिस नाशवान् सांसारिक सुखकी प्राप्तिमें सब प्राणी जागते हैं, परमात्माके तत्त्वको जाननेवाले मुनिके लिये वह रात्रिके समान है ॥ ६९ ॥ अध्याय - 2

Method/Process/Instrument

29-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- तपस्या द्वारा अपने विकर्मों वा तमोगुण के संस्कारों को भस्म करने वाले तपस्वीमूर्त भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जैसे अभी ईश्वरीय पालना का कर्तव्य चल रहा है ऐसे लास्ट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुणी संस्कार वा प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने का कर्तव्य चलना है। Coming soon...

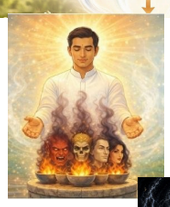

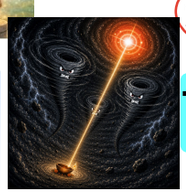

इसके लिए सदा एकरस स्थिति के आसन पर स्थित हो अपने तपस्वी रूप को प्रत्यक्ष करो।

आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमानी बनने की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

स्लोगन:- संस्कारों की टक्कर से बचने के लिए बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो।

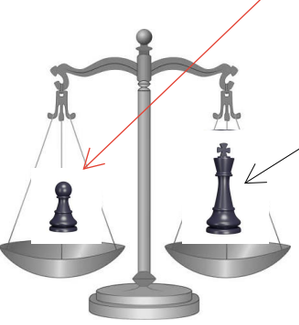

Points: ज्ञान ... धा...

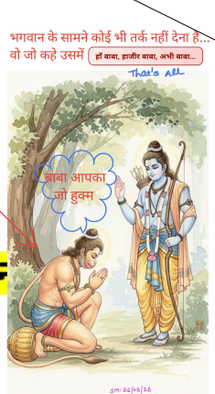

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

बाप को भोलानाथ कहते हैं लेकिन ऐसा भोला नहीं है जो सामना न कर सके। भोलानाथ के साथ -साथ आलमाइटी अथॉरिटी भी है।

आप भी अपने शक्ति स्वरूप को भूल सिर्फ भोले नहीं बनना, नहीं तो माया का गोला लग जायेगा।

ऐसा शक्ति स्वरूप बनो जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले।

बहुत सावधान, खबरदार-होशियार रहना।

Be Alert..

24×7

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

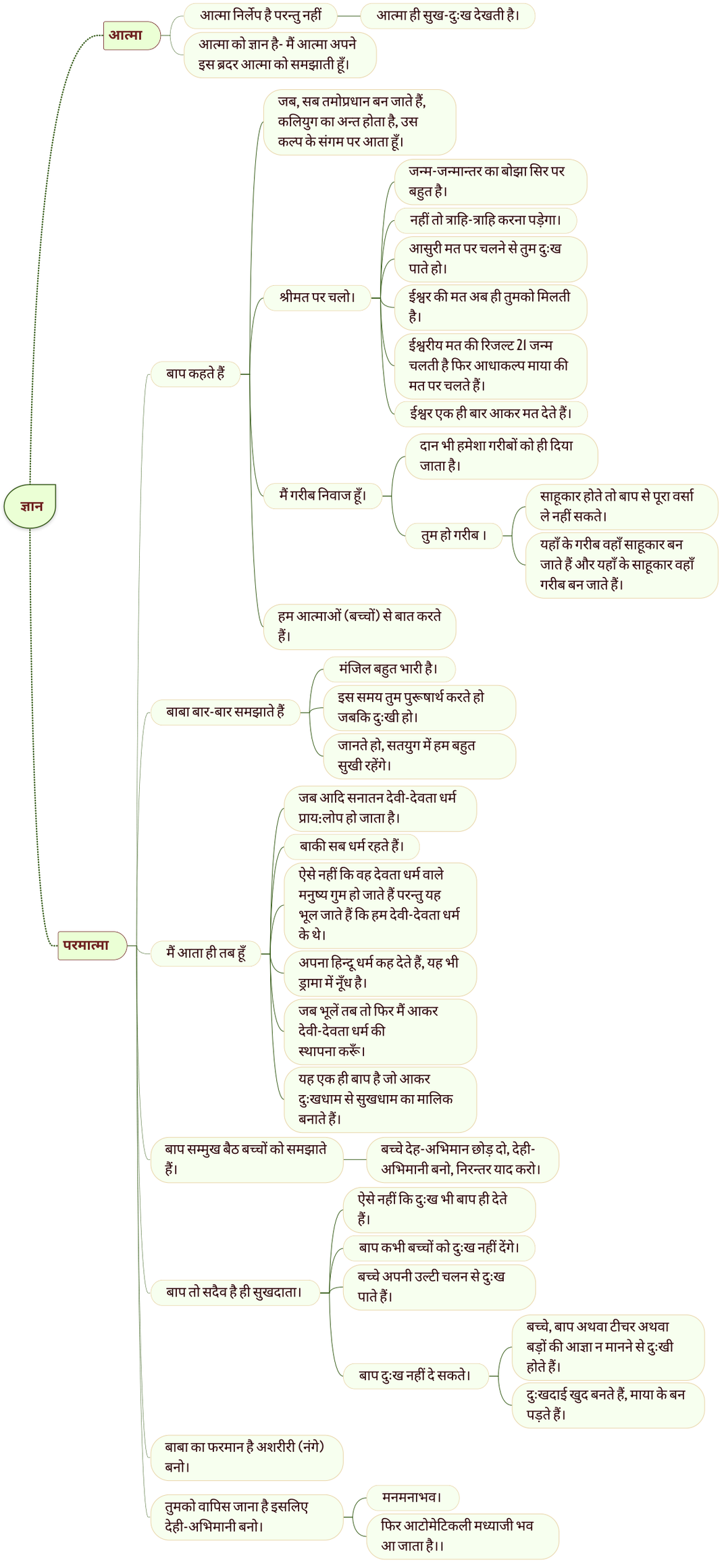
ज्ञान
आत्मा
आत्मा निर्लेप है परन्तु नहीं
आत्मा ही सुख-दु:ख देखती है।
आत्मा को ज्ञान है- मैं आत्मा अपने इस ब्रदर आत्मा को समझाती हूँ।
परमात्मा
बाप कहते हैं
जब, सब तमोप्रधान बन जाते हैं, कलियुग का अन्त होता है, उस कल्प के संगम पर आता हूँ।
श्रीमत पर चलो।
जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर बहुत है।
नहीं तो त्राहि-त्राहि करना पड़ेगा।
आसुरी मत पर चलने से तुम दु:ख पाते हो।
ईश्वर की मत अब ही तुमको मिलती है।
ईश्वरीय मत की रिजल्ट 21 जन्म चलती है फिर आधाकल्प माया की मत पर चलते हैं।
ईश्वर एक ही बार आकर मत देते हैं।
मैं गरीब निवाज हूँ।
दान भी हमेशा गरीबों को ही दिया जाता है।
तुम हो गरीब ।
साहूकार होते तो बाप से पूरा वर्सा ले नहीं सकते।
यहाँ के गरीब वहाँ साहूकार बन जाते हैं और यहाँ के साहूकार वहाँ गरीब बन जाते हैं।
हम आत्माओं (बच्चों) से बात करते हैं।
बाबा बार-बार समझाते हैं
मंजिल बहुत भारी है।
इस समय तुम पुरूषार्थ करते हो जबकि दु:खी हो।
जानते हो, सतयुग में हम बहुत सुखी रहेंगे।
मैं आता ही तब हूँ
जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है।
बाकी सब धर्म रहते हैं।
ऐसे नहीं कि वह देवता धर्म वाले मनुष्य गुम हो जाते हैं परन्तु यह भूल जाते हैं कि हम देवी-देवता धर्म के थे।
अपना हिन्दू धर्म कह देते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है।
जब भूलें तब तो फिर मैं आकर देवी-देवता धर्म की स्थापना करूँ।
यह एक ही बाप है जो आकर दु:खधाम से सुखधाम का मालिक बनाते हैं।
बाप सम्मुख बैठ बच्चों को समझाते हैं।
बच्चे देह-अभिमान छोड़ दो, देही-अभिमानी बनो, निरन्तर याद करो।
बाप तो सदैव है ही सुखदाता।
ऐसे नहीं कि दु:ख भी बाप ही देते हैं।
बाप कभी बच्चों को दु:ख नहीं देंगे।
बच्चे अपनी उल्टी चलन से दु:ख पाते हैं।
बाप दु:ख नहीं दे सकते।
बच्चे, बाप अथवा टीचर अथवा बड़ों की आज्ञा न मानने से दु:खी होते हैं।
दु:खदाई खुद बनते हैं, माया के बन पड़ते हैं।
बाबा का फरमान है अशरीरी (नंगे) बनो।
तुमको वापिस जाना है इसलिए देही-अभिमानी बनो।
मनमनाभव।
फिर आटोमेटिकली मध्याजी भव आ जाता है।।

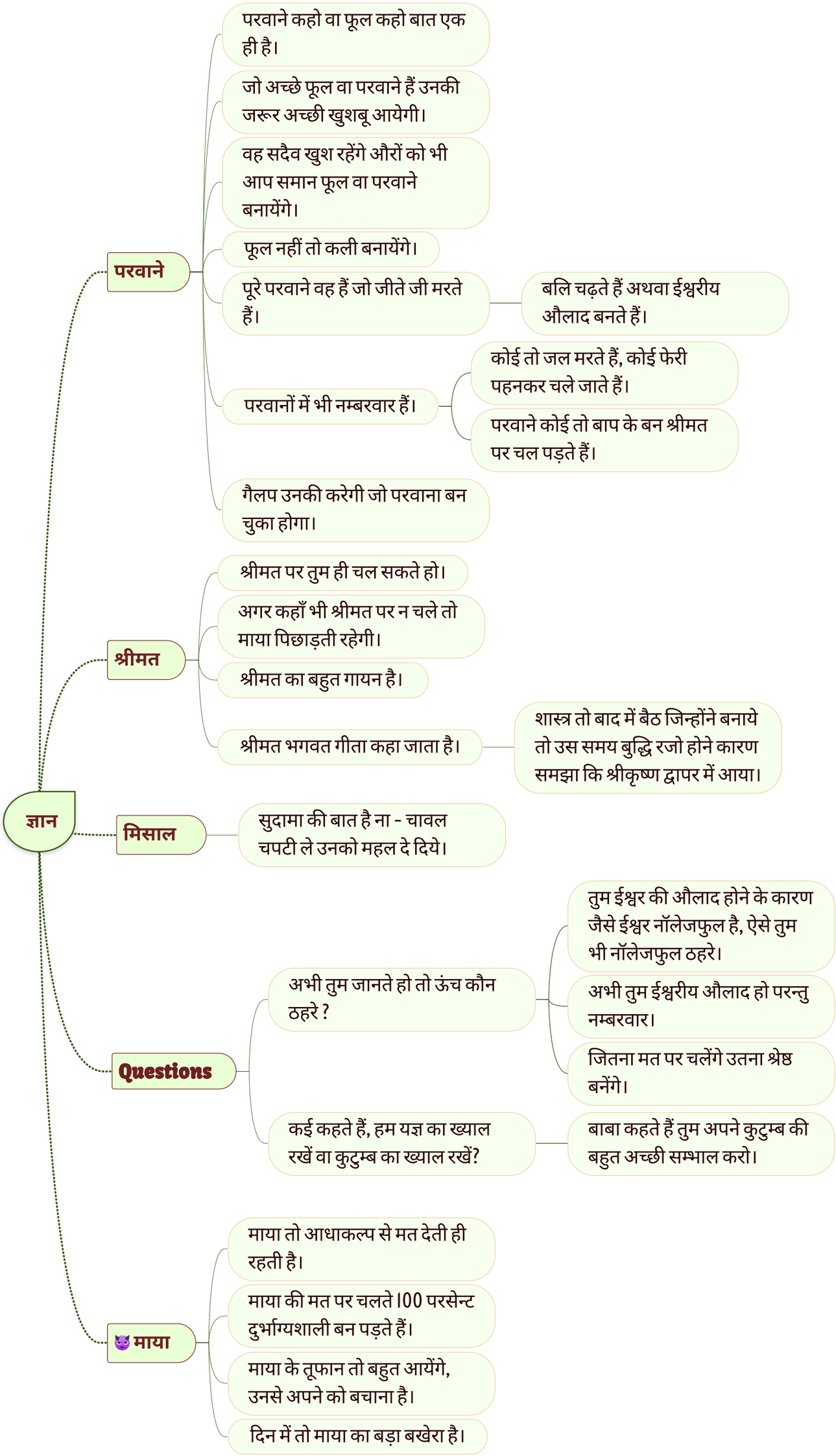

- **ज्ञान**
  - **परवाने**
    - परवाने कहो वा फूल कहो बात एक ही है।
    - जो अच्छे फूल वा परवाने हैं उनकी जरूर अच्छी खुशबू आयेगी।
    - वह सदैव खुश रहेंगे औरों को भी आप समान फूल वा परवाने बनायेंगे।
    - फूल नहीं तो कली बनायेंगे।
    - पूरे परवाने वह हैं जो जीते जी मरते हैं।
      - बलि चढ़ते हैं अथवा ईश्वरीय औलाद बनते हैं।
    - परवानों में भी नम्बरवार हैं।
      - कोई तो जल मरते हैं, कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं।
      - परवाने कोई तो बाप के बन श्रीमत पर चल पड़ते हैं।
    - गैलप उनकी करेगी जो परवाना बन चुका होगा।
  - **श्रीमत**
    - श्रीमत पर तुम ही चल सकते हो।
    - अगर कहाँ भी श्रीमत पर न चले तो माया पिछाड़ती रहेगी।
    - श्रीमत का बहुत गायन है।
    - श्रीमत भगवत गीता कहा जाता है।
      - शास्त्र तो बाद में बैठ जिन्होंने बनाये तो उस समय बुद्धि रजो होने कारण समझा कि श्रीकृष्ण द्वापर में आया।
  - **मिसाल**
    - सुदामा की बात है ना - चावल चपटी ले उनको महल दे दिये।
  - **Questions**
    - अभी तुम जानते हो तो ऊंच कौन ठहरे ?
      - तुम ईश्वर की औलाद होने के कारण जैसे ईश्वर नॉलेजफुल है, ऐसे तुम भी नॉलेजफुल ठहरे।
      - अभी तुम ईश्वरीय औलाद हो परन्तु नम्बरवार।
      - जितना मत पर चलेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे।
    - कई कहते हैं, हम यज्ञ का ख्याल रखें वा कुटुम्ब का ख्याल रखें?
      - बाबा कहते हैं तुम अपने कुटुम्ब की बहुत अच्छी सम्भाल करो।
  - **😈 माया**
    - माया तो आधाकल्प से मत देती ही रहती है।
    - माया की मत पर चलते 100 परसेन्ट दुर्भाग्यशाली बन पड़ते हैं।
    - माया के तूफान तो बहुत आयेंगे, उनसे अपने को बचाना है।
    - दिन में तो माया का बड़ा बखेरा है।

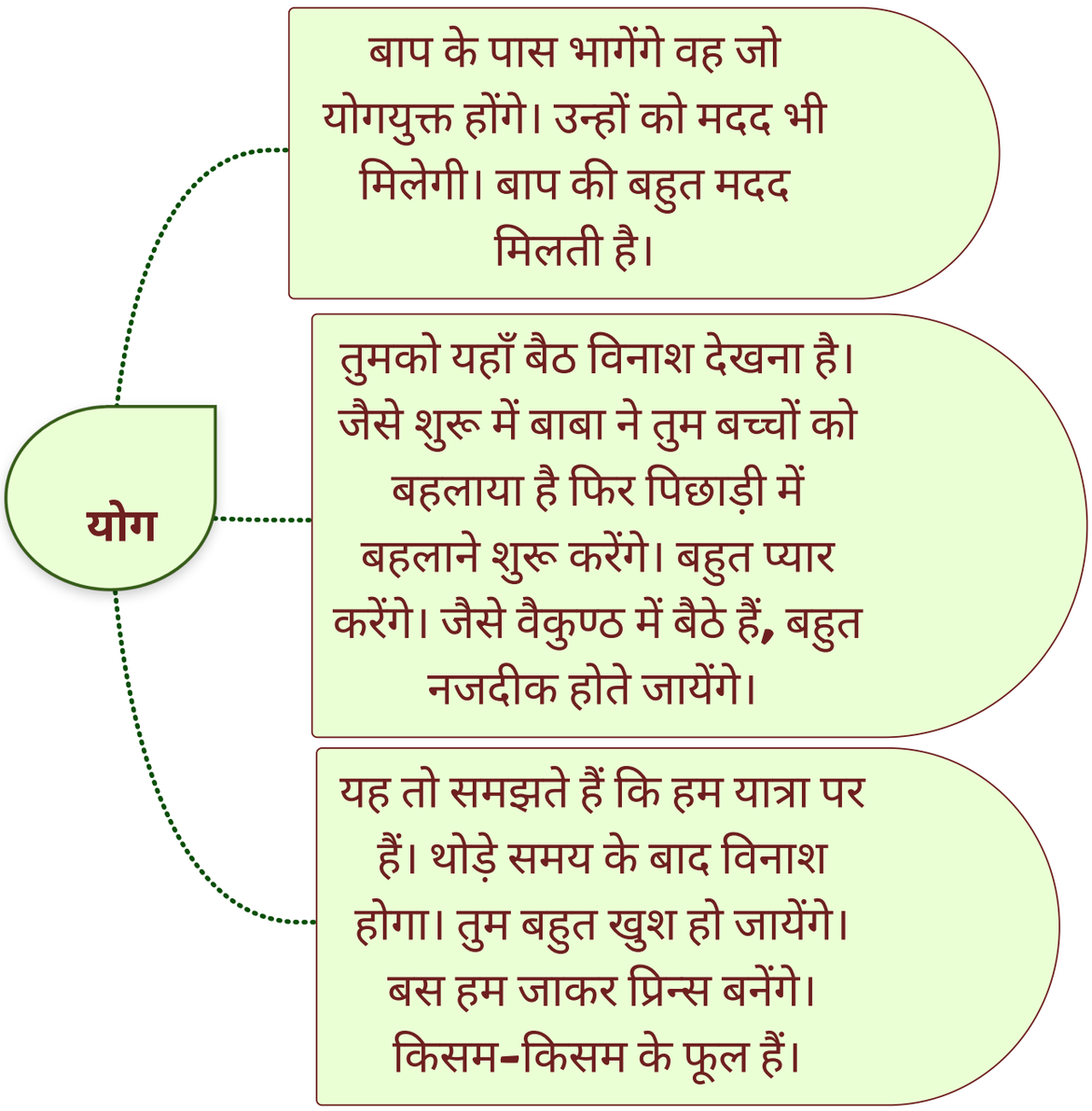
बाप के पास भागेंगे वह जो योगयुक्त होंगे। उन्हों को मदद भी मिलेगी। बाप की बहुत मदद मिलती है।
तुमको यहाँ बैठ विनाश देखना है। जैसे शुरू में बाबा ने तुम बच्चों को बहलाया है फिर पिछाड़ी में बहलाने शुरू करेंगे। बहुत प्यार करेंगे। जैसे वैकुण्ठ में बैठे हैं, बहुत नजदीक होते जायेंगे।
योग
यह तो समझते हैं कि हम यात्रा पर हैं। थोड़े समय के बाद विनाश होगा। तुम बहुत खुश हो जायेंगे। बस हम जाकर प्रिन्स बनेंगे। किसम-किसम के फूल हैं।

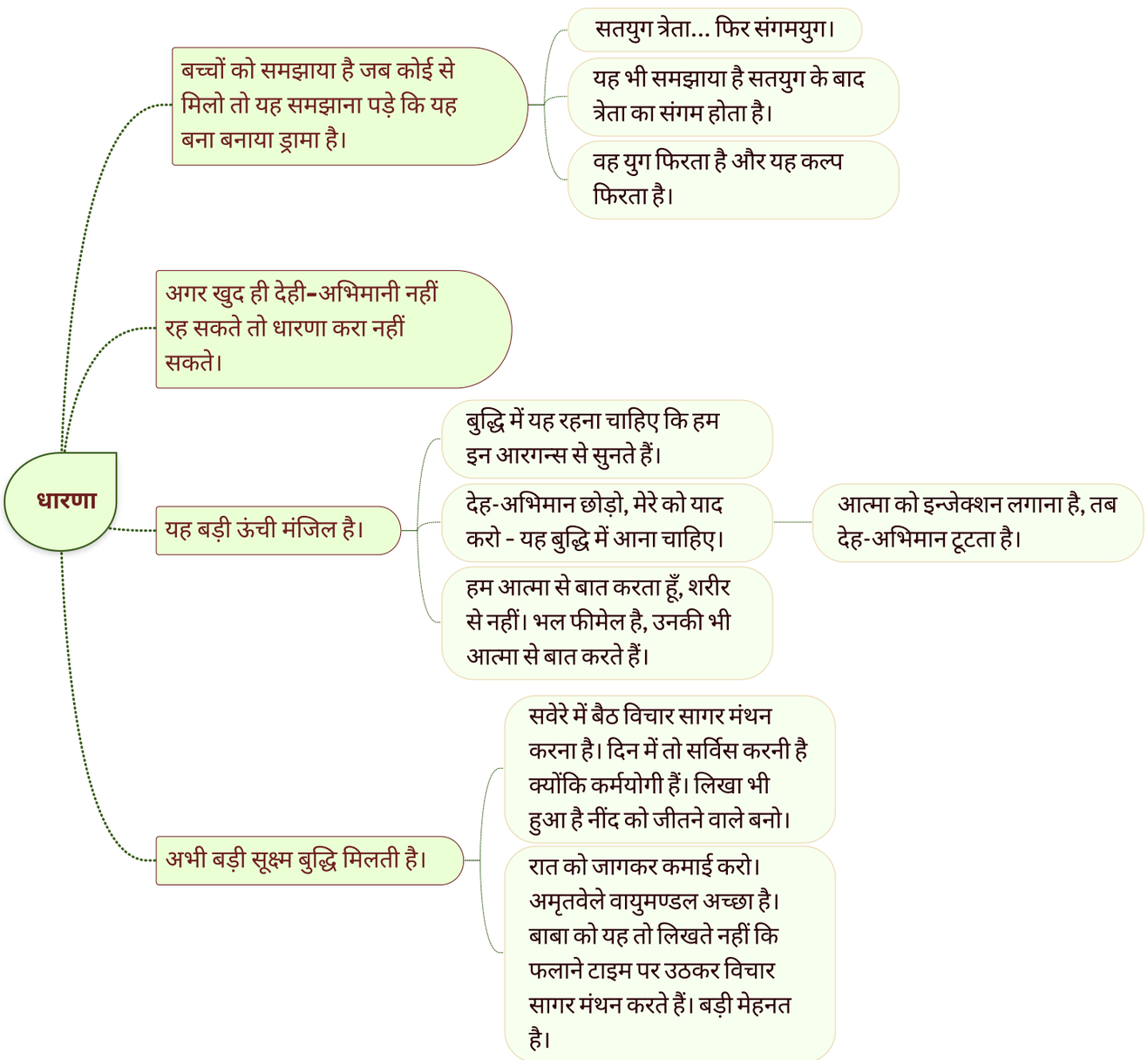
धारणा
बच्चों को समझाया है जब कोई से मिलो तो यह समझाना पड़े कि यह बना बनाया ड्रामा है।
सतयुग त्रेता... फिर संगमयुग।
यह भी समझाया है सतयुग के बाद त्रेता का संगम होता है।
वह युग फिरता है और यह कल्प फिरता है।
अगर खुद ही देही-अभिमानी नहीं रह सकते तो धारणा करा नहीं सकते।
यह बड़ी ऊंची मंजिल है।
बुद्धि में यह रहना चाहिए कि हम इन आरगन्स से सुनते हैं।
देह-अभिमान छोड़ो, मेरे को याद करो - यह बुद्धि में आना चाहिए।
आत्मा को इन्जेक्शन लगाना है, तब देह-अभिमान टूटता है।
हम आत्मा से बात करता हूँ, शरीर से नहीं। भल फीमेल है, उनकी भी आत्मा से बात करते हैं।
अभी बड़ी सूक्ष्म बुद्धि मिलती है।
सवेरे में बैठ विचार सागर मंथन करना है। दिन में तो सर्विस करनी है क्योंकि कर्मयोगी हैं। लिखा भी हुआ है नींद को जीतने वाले बनो।
रात को जागकर कमाई करो। अमृतवेले वायुमण्डल अच्छा है। बाबा को यह तो लिखते नहीं कि फलाने टाइम पर उठकर विचार सागर मंथन करते हैं। बड़ी मेहनत है।

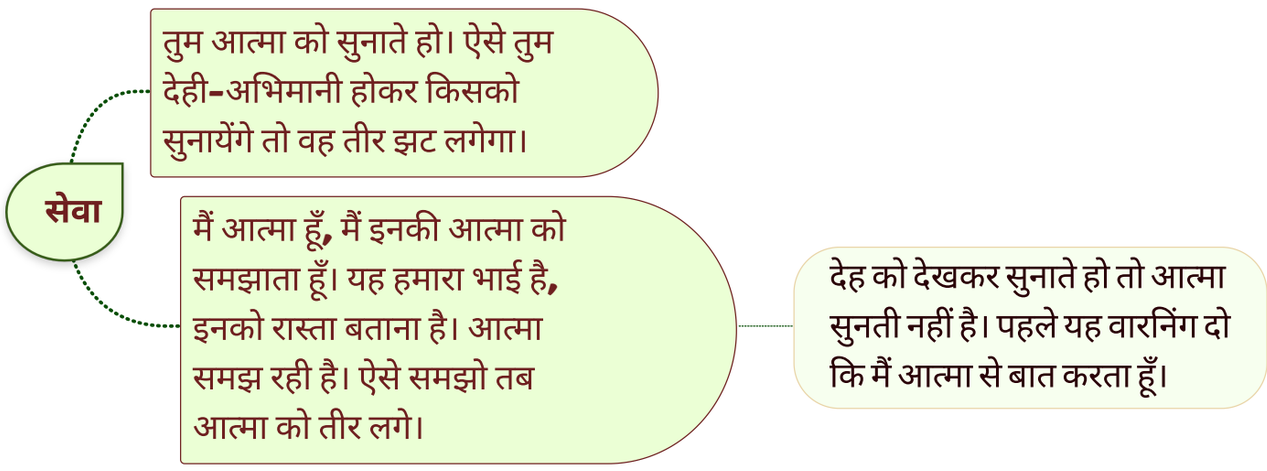
सेवा
तुम आत्मा को सुनाते हो। ऐसे तुम देही-अभिमानी होकर किसको सुनायेंगे तो वह तीर झट लगेगा।
मैं आत्मा हूँ, मैं इनकी आत्मा को समझाता हूँ। यह हमारा भाई है, इनको रास्ता बताना है। आत्मा समझ रही है। ऐसे समझो तब आत्मा को तीर लगे।
देह को देखकर सुनाते हो तो आत्मा सुनती नहीं है। पहले यह वारनिंग दो कि मैं आत्मा से बात करता हूँ।